वाराणसी परिचय

विश्व के जीवंत प्राचीनतम शहरों में से एक काशी नगरी, भारत देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक राजधानी है जो कि वर्तमान में वाराणसी नाम से प्रसिद्ध है। इस नगरी का हिंदू, जैन एवं बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विशेष महत्त्व है। सर्वधर्म समभाव की नगरी काशी से जैन धर्म का प्राचीनतम संबंध है। जैन कथा साहित्य में अनेक घटनाक्रमों के अंतर्गत काशी का उल्लेख मिलता है। यहां अनेक जैन राजा भी हुए हैं। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से चार तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ, श्रेयांसनाथ और पार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान आदि 15 कल्याणकों की काशी पवित्र धर्म भूमि है।

Kashi, one of the ancient living cities in the world, is India's religious, cultural and spiritual capital. The city of Varanasi has special significance for the followers of Hindu, Jain and Buddhist religions. Jainism has the oldest connect with Kashi, the city of religious harmony. Kashi has a number of references in Jain Agam literature. Many emperors were the followers of Jainism, belonging to Kashi. Out of the twenty-four Jain Tirthankaras, Kashi has been the holy land of four Tirthankaras i.e. Suparshvanath, Chandraprabh, Shreyansnath and Parshvanath regarding their 15 Kalyanaks of conception, birth, penance, knowledge etc.

वाराणसी को काशी, बनारस, वाराणसी आदि नामों से जाना जाता है। वाराणसी की प्राचीनता के बारे में मार्क ट्वेन ने कहा था कि 'बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किवदंतियों से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है।'

Varanasi is known by the names Kashi, Banaras, Varanasi etc. Regarding Varanasi's antiquity, Mark Twain said, 'Banaras is older than history, older than traditions, older than legends and when all these are put together, it is twice as old as that collection.'

वाराणसी स्थित राजघाट में खुदाई के दौरान प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए। यहां से प्राप्त सबसे प्राचीन जैन मूर्ति छठीं शताब्दी की भगवान महावीर

की तथा आठवीं शताब्दी की प्राप्त मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ की है। यह वर्तमान में राजकीय संग्रहालय लखनऊ में है। इसके अलावा खुदाई से प्राप्त अनेक प्राचीन मूर्तियां सारनाथ के संग्रहालय में भी सुरक्षित हैं। बनारस के जैन समुदाय के बारे में जानकारी पहाड़पुर में मिले गुप्तकालीन ताम्रपत्र (479 ई.) से भी प्राप्त होती है। बनारस में जैन समाज की निरंतरता ईसा पूर्व आठवीं सदी से लेकर आज तक बनी हुई है अतः बनारस के धार्मिक सांस्कृतिक विकास में जैन धर्म का महनीय योगदान है। वर्तमान में दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन समाज के लगभग 600 परिवार वाराणसी में रहते हैं।

During excavation at Rajghat in Varanasi, remains of an ancient Jain temple were found. The oldest Jain idol found here is of Bhagwan Mahavira of the sixth century and the idol of Bhagwan Parshvanatha is of the eighth century. It is currently in the State Museum, Lucknow. Apart from this, many ancient idols found from excavations are also preserved in the Museum of Sarnath. Information about the Jain community of Banaras is also obtained from the Gupta period copper plate (479 AD) found in Paharpur. Presently, the number of Jain families living in Varanasi, belonging to Digambar and Swetambar sects is about 600.

वाराणसी में चार तीर्थंकरों की जन्म स्थली निम्न स्थानों पर है जहां पर दिगम्बर और श्वेताम्बर आम्नाय के मंदिर निर्मित हैं:-

The birthplaces of four Tirthankaras in Varanasi are at the following places where temples of Digambar and Shvetambara sects are built:

- 7 वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान, भदैनी, वाराणसी
- 7th Tirthankara Suparshvanath, Bhadaini, Varanasi
- 8 वें तीर्थंकर चंद्रप्रभ भगवान, चंद्रावती, वाराणसी
- 8th Tirthankara Chandra Prabha, Chandravati, Varanasi
- 11 वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान, सारनाथ, वाराणसी
- 11th Tirthankara Shreyansnath, Sarnath, Varanasi
- 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान, भेलुपुर, वाराणसी
- 23rd Tirthankara Parshvanath, Bhelupur, Varanasi